International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.3 Jan-Fab 2022

सतत समाज के लिए पर्यावरण शिक्षा का महत्व

Dr. Sita Kumari
Assistant Professor, Department of Philosophy, YBN University Ranchi
Email: sitakumari610@gmail.com

सार:

सतत समाज के लिए पर्यावरण शिक्षा प्रणाली एक ऐसा विषय है, जिसे क्षेत्र विशेष की सीमाओं में बंधा नहीं जा सकता है। एक ओर जहां हम अपने आदि ग्रंथों में प्रकृति पर्यावरण एवं प्रदूषण की गाथा पाते हैं, वही दूसरी ओर आज की जनसाधारण को भी पर्यावरण शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है । आज पर्यावरण शिक्षा के अभाव में टिकाऊ समाज ना होकर बिखराव समाज होते जा रहा है । इसकी समृद्धि संसार की समृद्धि है । पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी तत्व चर- अचर, जीव -निर्जीव पर्यावरण की ही देन है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से ही समाज में शांति न्याय की स्थापना हो सकती है। पर्यावरण शिक्षा के द्वारा ही आने वाली पीढ़ी सशक्त हो सकती है पर्यावरण शिक्षा विश्व समुदाय को दी जाने वाली वह शिक्षा है, जिस वे आने वाली समस्याओं से अवगत होकर उनका हल खोज सकें तथा साथ ही भविष्य में आने वाली समस्याओं को रोक सके।

परिचय:

जिस प्रकार एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है ,ठीक उसी प्रकार स्वच्छ पर्यावरण से स्वच्छ एवं स्वस्थ जीवन विकसित होता है परन्तु आज मनुष्य अपने जीवनदायिनी पर्यावरण को अपने ही हाथों प्राकृतिक गतिविधियों से नष्ट कर रहे हैं । इसकी इन गतिविधियों के कारण केवल हमारी प्राण दायिनी वायु ही नहीं, अपितु भूमि, जल एवं जीवन का भारी नुकसान हो रहा है । अतः वर्तमान युग में संपूर्ण विश्व पर्यावरण के बिगड़ते स्वरूप और असंतुलन को लेकर चिंतित है इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण शिक्षा की जानकारी हो । जीवन चाहे मानव हो या पशु सभी का केंद्र पर्यावरण ही है मनुष्य अपने वर्तमान को ही सुखद बनाने में अपनी सारी प्रकृति संपदा का उपयोग करता रहेगा तो फिर भविष्य खतरे में डूब जाएगा । पर्यावरण का संबंध वनस्पति से है साथ ही इसका संबंध आध्यात्मिक एवं नैतिक उत्थान से है वह व्यक्ति और समाज की समुचित गतिविधियां अहिंसा और मानवता सिंचित से पुष्पित और फलित होती है।

सशक्त समाज के लिए पर्यावरण शिक्षा का विवेचना भारतीय दर्शन में बौद्ध दर्शन का करना चाहेंगे ।भगवान बुद्ध का जन्म भूमि प्राकृतिक वातावरण में हुआ था उनकी तपस्थली ,कथा, बौद्धि की प्राप्ति प्राकृतिक वातावरण में हुआ । सम्यक ज्ञान प्राप्ति

के बाद प्रथम उपदेश ऋषिपतन मृतदान में दिया A उनका महापरिनिर्वाण काशीनगर वन में दो जोड़े साल वृक्ष के मध्य हुआ था यही कारण है कि भगवान बुद्ध को प्रकृति से बड़ा लगाव रहा है बुद्ध का विचार था सभी लोग समान है इसलिए सभी का कल्याण हो तथा सभी सुखी हो यही कोशिश करना चाहिएA पर्यावरण के ऐतिहासिक पहलुओं से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण का ध्यान रखना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व होता है । यदि व्यक्ति को पर्यावरण का ज्ञान नहीं होगा तो उसका जीवन प्रदूषित हो जाएगा तथा उनका जन जीवन दुखों से त्रस्त हो जाएगा । भगवान बुद्ध ने हमेशा सशक्त समाज निर्माण के लिए मैत्री, करुणा ,अहिंसा तथा सत्य की शिक्षा दिया है। इसमें अहिंसा का सीधा संबंध पर्यावरण से है। बौद्ध साहित्य में सामाजिक पर्यावरण की भी चर्चा की गई है ।संसार के सभी मानवीय संस्कृतियों का सामाजिक विकास होता है यथार्ता वातावरण से ही संभव है।भगवान बुद्ध के अनुसर यह लोक कर्म से चलता है। जिस प्रकार चलते हुए रथ का पहिया अपनी धुरी से सदा चलता रहता है उसी प्रकार सभी प्राणी भी कर्म से बंधे रहकर अपना काम में लगे रहते हैं। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि समाज पर्यावरण की विकास में बुद्ध की पर्यावरण शिक्षा सहायक है बुद्ध ने भी " वसुधैव कुटुंबकम" की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। पर्यावरण की रक्षा करना मानव का परम कर्तव्य है । पर्यावरण की शुद्धता ही मानव जीवन की आधारशिला है बुद्ध ने पर्यावरण की शुद्धता को बनाए रखने पर बल दिया है तथा बतलाया कि हरित घासो तथा जीवन दाहिनी जल को प्रदूषित न करें।

जैन विचारक यह मानते हैं कि पर्यावरण शिक्षा का संबंध व्यक्ति के चिंतन, मनन और आचरण के साथ है जैन दार्शनिक मानते हैं कि व्यक्ति का विकास जिस प्रकार की वातावरण में व्यतीत होता है उसका चरित्र भी वैसा ही निर्मित होता है।'जैन दर्शन में भी पर्यावरण शिक्षा की व्याख्या की गई है आम आदमी के ऊपर इस संबंध में एक ही प्रकार के नैतिक आचरण की अनुशंसा की है किसी भी जीव की हत्या मत करो, किसी भी जीव के प्रति हिंसा का भाव मत रखो, उनका विचार है कि अन्य जीवो के प्रति क्रूर रहकर कोई भी मनुष्य सुखी नहीं रह सकता । इस तरह पर्यावरण मानव की संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

मीमांसको ने भी पर्यावरण नीति शास्त्र की विवेचना की है प्रातः वंदन, सूर्य नमस्कार संध्या उपासना भोजन के समय अन्य जीवों और मृत्यु पूर्वजों का अंश निकलना और यज्ञ में हवन आदि के द्वारा पर्यावरण की पुष्टि की गई है। सूर्य नमस्कार के द्वारा सूर्य की महिमा परिलक्षित होती है। सूर्य ही ऊर्जा का अच्छे स्रोत है यदि सूर्य निष्क्रिय हो जाए तो वर्षा नहीं होगी, पेड़ पौधे नहीं रहेंगे परिणाम स्वरुप प्राण वायु शुद्धिकरण असंभव हो जाएगा । इस प्रकार सूर्य उपासना के द्वारा प्रकृति की पूजा होती है और पर्यावरण का संपोषण होता है सशक्त समाज के लिए दर्शन में भी पेड़ पौधों की प्रति सजगता प्रदर्शित की गई है जिसमें पीपल , तुलसी और नीम को देवत्व का स्थान दिया गया है। मीमांसा दर्शन भी गंगा स्नान तथा इसकी पूजा को नि:श्रेया प्राप्ति के लिए अनिवार्य बतलाया गया है।

भारतीय दर्शन में योग दर्शन का भी पर्यावरण शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान रहा है योग दर्शन में मानव शरीर को शुद्ध करने के लिए अनेक उपाय बताए गए हैं जिनमें यम और नियम प्रमुख है। इसके द्वारा ज्ञान होने पर प्रकृति से प्रेम होने लगता है जिससे प्राकृतिक

पर्यावरण प्रदूषण की संभावना छीन हो जाएगी और देखा जाए तो सशक्त समाज के लिए पर्यावरण शिक्षा की जागृति उत्पन्न होती है।

सशक्त समाज बनाने के लिए पर्यावरण शिक्षा मात्र विद्यालयों एवं विश्वविद्यालय तक सीमित ना होकर जन-जन तक पहुंचाना आवश्यक है। जब तक देश का प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण एवं जीवन में उसके महत्व को नहीं समझेगा तब तक वह अपने उत्तरदायित्व को नहीं समझ सकेगा जो उसे पर्यावरण के प्रति निभाना चाहिए। सशक्त समाज के लिए पर्यावरण शिक्षा एक पुनीत कार्य है जिसे करके एवं उसके मार्ग पर चलकर वर्तमान के साथ भविष्य को भी सुंदर बना सकते हैं प्राकृतिक आपदाओं को कम कर सकते हैं विलुप्त होते जीव जंतु की प्रजातियों की रक्षा कर सकते हैं और जलवायु एवं भूमि को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं पर्यावरण शिक्षा माध्यम है जिसके द्वारा पर्यावरण तथा जीवन की गुणवत्ता की रक्षा की जा सकती है पर्यावरण पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव को पर्यावरण के अंतर संबंधों की जानकारी देना।

पर्यावरण शिक्षा अर्थात् पर्यावरण के विविध पक्षों, इसके घटकों, मानव के साथ अंतर्संबंधों पारिस्थितिक-तंत्र, प्रदूषण विकास, नगरीकरण, जनसंख्या आदि का पर्यावरण आदि की समुचित जानकारी देना । यह शिक्षा मात्र विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों तक ही सीमित न होकर जन-जन को देना आवश्यक है । जब तक देश का प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण एवं जीवन में उसके महत्व को नहीं समझेगा उस समय तक वह अपने उत्तरदायित्व को नहीं समझ सकेगा, जो उसे पर्यावरण के प्रति निभाना है । पर्यावरण शिक्षा के मार्ग पर चलकर वर्तमान के साथ भविष्य को सुंदर बना सकते हैं, अनेक प्राकृतिक आपदाओं को कम कर सकते हैं, विलुप्त होते जीव-जंतुओं व पादपों की प्रजातियों की रक्षा कर सकते हैं और जल, वायु एवं भूमि को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं पर्यावरण शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा पर्यावरण तथा जीवन की गुणवत्ता की रक्षा की जा सकती है । पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव-पर्यावरण के अंतर्संबंधों की व्याख्या करना तथा उन संपूर्ण घटकों का विवेचन करना है जो पृथ्वी पर जीवन को परिचालित करते हैं इसमें मात्र मानव जीवन ही नहीं अपितु जीव-जंतु एवं वनस्पति भी सम्मिलित हैं ।

सशक्त समाज बनाने के लिए पर्यावरण शिक्षा का दर्शन पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव देखने को मिलता है पर्यावरण शिक्षा-दर्शन की वह शाखा है, जिसमें शिक्षा के सम्प्रत्ययों, उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों एवं शिक्षा सम्बन्धी अन्य समस्याओं के सन्दर्भ में दार्शनिक सम्प्रदायों पर विचारों किया जाता है। पर्यावरण शिक्षा-दर्शन, दर्शन का ही एक क्रियात्मक पक्ष है, जिसका विवेचन अलग से न होकर दर्शन के अन्दर ही किया गया है। उसमें भी अन्तिम सत्यों, मूल्यों, आदर्शों, आत्मा-परमात्मा, जीव, मनुष्य, संसार, प्रकृति आदि पर चिन्तन एवं उसके स्वरूप को जानने का प्रयास किया जाता है।

पर्यावरण शिक्षा ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा सशक्त समाज बनाने के लिए दर्शन के सिद्धान्तों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाया जा सकता है। पर्यावरण शिक्षा का प्रारंभ बाल्यकाल से ही हो जाता है । प्राथमिक स्तर पर ही बच्चे में विज्ञान के उपयोग एवं वैज्ञानिक सोच का विकास होना चाहिये । बच्चे में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य किस प्रकार गंदगी से बचा जा सके इसका

भी पर्याप्त ज्ञान होना चाहिये । पर्यावरण के प्रति चेतना जगाई जा सकती है इसके पश्चात् पर्यावरण की समस्याओं का ज्ञान एवं उनके निराकरण का ज्ञान दिया जाना आवश्यक है और इसके साथ ही शोध कार्य द्वारा इस दिशा में नवीन तकनीक का विकास किया जाना चाहिये । ये सभी कार्य पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से संपन्न किये जा सकते हैं । पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप भारतीय दर्शन एवं पश्चात दर्शन में भी प्रस्तुत किया गया है

सशक्त समाज बनाने के लिए मानव, तकनीकी विकास एवं पर्यावरण के अंतर्संबंधों से जो पारिस्थितिकी चक्र बनता है और वह संपूर्ण क्रिया-कलापों और विकास को नियंत्रित करता है । यदि इनमें संतुलन रहता है तो सब कुछ सामान्य गति से चलता रहता है, किंतु किसी कारण से यदि इनमें व्यतिक्रम आता है तो पर्यावरण का स्वरूप विकृत होने लगता है और उसका हानिकारक प्रभाव न केवल जीव जगत् अपितु पर्यावरण के घटकों पर भी होता है । वर्तमान में यह क्रम तीव्रता से हो रहा है । औद्योगिक तकनीकी, वैज्ञानिक, परिवहन विकास की होड़ में हम यह भूल गये थे कि ये साधन पर्यावरण को प्रदूषित कर मानव जाति एवं अन्य जीवों के लिये संकट का कारण बन जायेंगे कुछ समय विचार-विनिमय में बीतता गया, तर्क-वितर्क चलता रहा तथा पर्यावरण अवकर्षण में वृद्धि होती गई ।

वास्तविक चेतना का उदय तब हुआ जब विकसित देशों में यह संकट अधिक हो गया और उन्होंने इस दिशा में अपने प्रयासों को तेज कर दिया, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मैचों पर पर्यावरण चेतना एवं इसके खतरों की आवाज उठने लगी ।इसी के साथ 'पर्यावरण शिक्षा' का विचार भी बल पकड़ने लगा, क्योंकि इससे पूर्व पर्यावरण का विभिन्न विषयों में भिन्न-भिन्न परिवेशों में अध्ययन किया जाता था । अब यह सभी स्वीकार करते हैं कि सशक्त समाज बनाने के लिए पर्यावरण को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिये जिससे छात्रों में प्रारंभिक काल से ही पर्यावरण चेतना जागत की जा सके ।

जनसंख्या में हो रही तीव्र वृद्धि तीव्रता के साथ हो रहा औद्योगिक विकास, वन कटाव, यातायात वाहनों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि तथा जनसाधारण की अज्ञानता तथा अशिक्षा के कारण आज पर्यावरण शिक्षा का महत्व दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। जनसाधारण में बढ़ती हुई निरक्षरता और अज्ञानता के कारण पर्यावरण सुरक्षा तथा संरक्षण के उपायों का भरपूर प्रयोग नहीं हो पा रहा है। अज्ञान तथा अशिक्षा से ग्रसित मनुष्य पर्यावरण की सुरक्षा नहीं कर सकता। पर्यावरण सुरक्षा के लिये पर्यावरण नियंत्रण भी आवश्यक है। जनसंख्या वृद्धि को कैसे रोका जाय वह पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में आता है।

वर्तमान में प्रत्येक देश में तीव्रगति से औद्योगीकरण हो रहा है। इससे पर्यावरण प्रदूषण की सम्भावनायें भी बढ़ती हैं। इनसे उत्पन्न प्रदूषण को रोकने व उसे नियन्त्रित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा आवश्यक है। पर्यावरण शिक्षा हमारी संस्कृति की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अहिंसा, जीव दया, प्रकृति-पूजन आदि हमारी संस्कृति के मूलाधार हैं। पर्यावरण शिक्षा में इन तथ्यों की यथेष्ट मात्रा में शिक्षा दी जाती है। बढ़ते शहरीकरण तथा नगरों के बढ़ते आकार ने व्यक्तियों को प्रकृति से दूर कर दिया है। प्रकृति के जैविक एवं अजैविक तत्वों को समान रूप से प्रकृति के निकट जाने के लिये पर्यावरण शिक्षा आवश्यक है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि पर्यावरण की शिक्षा आज की आवश्यकता है। हमें इसकी उपादेयता को स्वीकार करना चाहिए तथा इसके कार्यक्रमों की सफलता में अपना सक्रिय योगदान देना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा अन्ततः हमें पर्यावरण की गुणवत्ता तथा जीवन की गुणवत्ता देने वाली है।

निष्कर्ष:-

संक्षेप में, सशक्त समाज बनाने के लिए पर्यावरण शिक्षा वह साधन है जिससे बाल्यकाल से ही पर्यावरण का सही ज्ञान दिया जाना चाहिये, अर्थात् पर्यावरण के प्रति चेतना जगाई जानी चाहिए । इसके पश्चात् पर्यावरण की समस्याओं का ज्ञान एवं उनके निराकरण का ज्ञान दिया जाना आवश्यक है । पर्यावरणीय शिक्षा को प्रभावशाली बनाने हेतु इसकी विषय-वस्तु का चयन सावधानीपूर्वक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करना आवश्यक है । इसके प्रारूप के निर्धारण में सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का सुनियोजित समावेश होना चाहिये तथा शिक्षा के स्तर के अनुरूप इसकी विषय-वस्तु में भी विकास आवश्यक है । सशक्त समाज बनाने के लिए पर्यावरणीय शिक्षा प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान दोनों में महत्व रखता है। इसका अध्ययन जहाँ जीव विज्ञान, भौतिकी, रसायन, अभियांत्रिकी में होता है वहीं समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, प्रजातीय विज्ञान, भूगोल आदि में भी महत्त्वपूर्ण है । पर्यावरण का भौगोलिक अध्ययन अति महत्वपूर्ण है क्योंकि भूगोल एक ऐसा विषय है जो प्रारंभ से ही मानव-पर्यावरण के अंतर्संबंधों का अध्ययन करता आया है और वर्तमान समय में पर्यावरण के विविध पक्षों का क्षेत्रीय संरक्षण की आवश्यकता है । जिसके लिए समाज में पर्यावरण शिक्षा का बढ़ावा देना आवश्यक है । आज की परिस्थितियों में जब हम अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं परम्परा को भूल कर भौतिकवादी सभ्यता का अंधानुकरण कर रहे हैं, पर्यावरण शिक्षा दर्शन हमें सही दिशा का निर्देश करता हैं। आज धार्मिक एवं अध्यात्मिक जागृति की नितान्त आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. भारतीय दर्शन एवं संस्कृति डॉ. ईश्वर चंद एस .के .पब्लिशिंग कंपनी
2. पर्यावरण शिक्षा राम शर्मा वी पी शर्मा
3. सामाजिक विज्ञान समकालीन भारत
4. भारतीय दर्शन डॉ. नंदकिशोर देवराज
5. पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय परिपेक्ष राणा बलवंत और डॉक्टर दीप्ति जैन
6. गौतम बुद्ध का वैज्ञानिक समाज दर्शन आधुनिक परिपेक्ष डॉ श्याम लाल समाज और राजनीतिक दर्शन एवं धर्म दर्शन डॉक्टर रामेंद्र